श्री महावीर भगवान का मंदिर
डूँगरपुर

यह शिखरबंद मंदिर श्री गंभीरा पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर परिसर में स्थित है। सूत्रों के अनुसार यह मंदिर करीब 600 वर्ष प्राचीन है। श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर पूर्ण बनने के पश्चात् भक्तों के लिए यह मंदिर बनवाया क्योंकि उस समय जैनों के यहां पर 700 घर थे। मंदिर के द्वार पर मंगलमूर्ति पर निम्न लेख है।

''संवत 1480 वर्षे पूर्णिमा पक्षे श्री हेमचंद्रसूरि शिष्य व लक्ष्मीचंद्र सूरिणी। महावीर प्रसाद। कारयिता गुरूश्रेयोर्थ।''

इस प्रकार एक शिलालेख भी द्वार पर लगा हुआ है। इससे यह मंदिर 600 वर्ष प्राचीन होना प्रमाणित है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री महावीर भगवान (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान (दाएं) की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है।

(3) श्री धर्मनाथ भगवान (बाएं) की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है।

उत्थापित अष्टमंगल यंत्र 5'' X 3'' का है। इस पर सं. 2065 का लेख है।

इस मंदिर में पूर्व में सं. 1994 में व बाद में सं. 2036 में जीर्णोद्धार हुआ था।

सभा मण्डप में सिद्धचक्र पट्ट बना हुआ है।

मंदिर परिसर में पांच मंजिला कुआ बना हुआ हे। जहां से कई वर्षों तक आस–पास की बस्ती वाले इसी कुएं के पानी का उपयोग करते थे। अब मंदिर परिसर को बंद कर दिया।

इस मंदिर की वार्षिक ध्वजा कार्तिक सुदि 15 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख श्री जैन श्वेताम्बर बीसा पोरवाल संघ, डूंगरपुर द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : श्री हेमेन्द्र भाई, 09414102345, 09352794588

हस्तगिरी पर्वत पर आदिनाथ प्रभु की प्राचीन देहरी का दूर दृश्य

सभी सयाने एक मत

- भगवती सूत्र के प्रारम्भ में ''णमो बंभीए लिवीए'' ऐसा कहकर सुधर्मास्वामी गणधर ने श्रुतज्ञान की स्थापना (मूर्ति) को नमस्कार किया है।
- केलवा की अंधारी ओरी में तेरापंथी आचार्य भारमलजी की काष्ठ की खड़ी मूर्ति है।
- तुलसी साधना शिखर के प्रांगण में आचार्यश्री भारमलजी स्वामी जी पाषाणमय चरण पादुकाएँ स्थापित है।
- रूण (जिला नागौर) में स्व. युवाचार्य मिश्रीमलजी म. मधुकर की प्रेरणा से बनी हुई स्व. हजारीमलजी म. की संगमरमर की बड़ी मूर्ति है।
- जैतारण के पास गिरिगांव में स्थानक के गोखड़े में स्था. मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म.सा. की मूर्ति है।
- जसोल (जिला बाड़मेर) में तेरापंथी संत स्व. जीवणमलजी स्वामी की संगमरमर की मूर्ति है।

श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर

डूँगरपुर

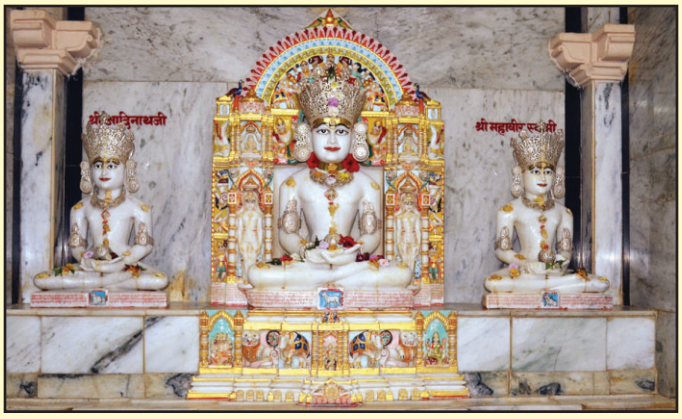

यह शिखरबंद मंदिर शहर के आदर्शनगर (वर्धमान, जैन कॉलोनी) में स्थित है। यह मंदिर 25 वर्ष प्राचीन है। मंदिर का खनन मुर्हत और शिलान्यास सं. 2045 माह शुक्ला 13 को हुआ।

बिबों (प्रतिमाओं) की प्रतिष्ठा सं. 2051 फाल्गुन शुक्ला 13 को आचार्य श्री देवसूरि जी व आचार्य श्री हेमचंद्रसूरि जी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न हुई।

मंदिर के तीनों ओर दरवाजे है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाए स्थापित है :

(1) श्री सम्भवनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की मय परिकर के 27'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएँ)

(3) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएँ)

इन तीनों प्रतिमाओं पर सं. 2051 फाल्गुन शुक्ला प्रतिपदा का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व मंत्र :

(1) श्री संभवनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री सिद्धचक्र यंत्र 8'' का गोलाकार है।

(4) श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' X 3'' का है।

(5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3.5'' ऊँची प्रतिमा है।

इन पांचों प्रतिमाओं व यंत्रों पर सं. 2051 का लेख है।

(6) श्री शांतिनाथ भगवान की चतुर्विशंति 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर 1804 फाल्गुन सुदि का लेख है।

(7) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(8) श्री भक्तामर पट्ट ताम्बे का 14'' X 13'' का है।

दोनों ओर :

(1) श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' व नाग तक 19'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इन दोनों पर सं. 2051 का लेख है।

सभा मण्डप में :

(1) श्री माणिभद्र यक्ष की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(2) श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(3) श्री नाकोड़ा भैरव की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(4) श्री नेमिसूरि जी म.सा. की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(5) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(6) श्री घंटाकर्ण महावीर की श्वेत पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

मंदिर के साथ ही बना हुआ उपाश्रय है, प्रवचन हॉल, आराधना हॉल, नोहरा है। एक कुंआ भी है। इसके साथ–साथ मंदिर के पीछे व आगे की ओर छोटे व बड़े पार्क बने हुए है। ऐसा भी बताया गया है कि पार्क को छोटे–बड़े कार्यक्रम के लिए किराए पर दिए जाते है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन शुक्ला प्रतिपदा को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर वीशा हुमड़ संघ की श्री वर्धमान नगर जैन सोसाइटी, डूंगरपूर की ओर से श्री कन्हैयालाल जी दावड़ा करते है। सम्पर्क सुत्र : 02962-230143

किले पर जिनालयों का दृश्य – जैसलमेर

ज्ञान भण्डार में जो पुस्तकें वे निरर्थक नहीं है।
उनके योग्य कोई न कोई जीव इस विश्व में है ही।
योग्य समय पर वे आ ही पहुंचेगे।
पुस्तकें स्वयं के योग्य पाठकों की प्रतीक्षा करती हुई भीतर बैठी हुई है।
– 'कहे कलापूर्णसूरी' से साभार

श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर

डूँगरपुर

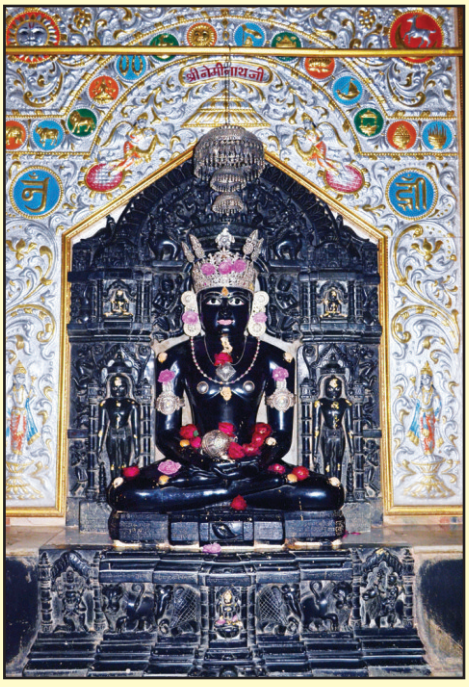

यह शिखरबंद मंदिर शहर से सागवाड़ा की ओर जाने वाली मुख्य सड़क के किनारे स्थित है। मंदिर का निर्माण मुनि महाराज के आए स्वप्न के आधार पर हुआ श्याम पटट् पर निर्मित पादुका एक खेत में थी वहां से लाकर मंदिर क्षेत्र में श्री नित्यवर्द्धन सागर जी म.सा. की प्रेरणा से उनके ही प्रयास से भूमि आवंटन कराई और 101 रुपये जमा कराकर जमीन को अपने सुपुर्दगी में ली।

मंदिर निर्माण की सामग्री मंदिर के पास ही पड़ी खाली भूमि पर रखी और निर्माण करते समय भूमि का कुछ अतिक्रमण हो जाने से वह भूमि लीज की राशि जमा करा क्रय की गई। यह मंदिर 30 वर्ष प्राचीन है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाए स्थापित है :

(1) श्री नेमिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 27'' व परिकर सहित 47'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 वैशाख शुक्ला 10 का लेख है।

बाहर :

(1) श्री नेमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। अपठनीय लेख है।

रंगमण्डप में :

(1) श्री सीमंधर स्वामी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र श्वेत पाषाण की 17'' X 17'' का है। (दाए) इन दोनों पर सं. 2040 का लेख है।

(3) श्री आंबिका देवी की श्वेत पाषाण की 21''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2061 चैत्र कृष्णा 13 का लेख है।

(4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17''ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(5) श्री गोतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 11''ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(6) श्री चक्रेश्वरीदेवी की श्वेत पाषाण की 21''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2061 चैत्र कृष्णा 13 का लेख है । (बाएं)

उत्थापित – धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री ऋषिमण्डल यंत्र 17'' X 13'' का है । इस पर सं. 2040 का लेख है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(3) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(4) श्री शांतिनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2035 का लेख है।

(5) श्री अष्टमंगल यंत्र 5'' X 2.5'' का है। इस पर सं. 2065 का लेख है।

(6) श्री नेमिनाथ भगवान की 12'' ऊँची प्रतिमा है।

(7) श्री पद्मावती देवी की 3'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर – सभा मण्डप में :

(1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर 2053 का लेख है।

(2) श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 13''प्रतिमा है।

परिक्रमा – कक्ष में (पीछे) :

श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री आदिनाथ भगवान की चरण पादुका श्याम पट्टी 17'' X 13'' पर स्थापित है। इस पर सं. 1829 चैत्र वदि 5 का लेख है। यह वही पादुका है जिसका विवरण ऊपर दिया है।

मंदिर परिसर में उपाश्रय, धर्मशाला, भोजनशाला, तीन हॉल, व छात्रावास के लिए कमरे है। पूर्व में छात्र रहकर अध्ययन करते थे। भोजन की व्यवस्था वर्तमान में बंद है।

मंदिर के बाहर पांच दुकाने है। जो किराए पर दी गई है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा कार्तिक पूर्णिमा को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था श्री नेमिनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट द्वारा की जाती है। धर्मशाला की व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है। वर्तमान में अध्यक्ष श्री हेमेन्द्र जी महता है। सम्पर्क सूत्र – 09414102345

नोट :

करीब 80 वर्ष पूर्व प.पू. मुनि श्री महेन्द्रविजयजी म.सा. व श्री पुण्यविमलजी म.सा. डूँगरपुर पधारे । दैनिक कार्य (शौच) के लिए पातेला तालाब की ओर गए वहाँ रायण वृक्ष के बीच एक देहरी देखी उन्होंने सोचा कि यहाँ पर चरण पादुका के अवशेष होना चाहिए तब उन्होंने श्रावकों से वार्ता की। उस समय के शासक से वार्ता की, अनुमति लेकर उस स्थान पर खनन कार्य प्रारंभ किया। वहाँ पर 39 धातु की प्रतिष्ठित प्रतिमाएं पार्श्वनाथ भगवान मंदिर में विराजमान कराई व एक चरण पादुका भी प्राप्त हुई जो इसी मंदिर में स्थापित है ।

मन्दिर समूहों का दृश्य तलहटी, पालीताणा

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर

पुनाली

यह शिखरबंद मंदिर डूंगरपुर से 25 किलोमीटर दूर गांव में स्थित है। उल्लेखानुसार यह मंदिर वि.सं. 11वीं शताब्दी का निर्मित है। जीर्णोद्धार के समय पुनः सं. 1687 में प्रतिष्ठा होने का उल्लेख है।(जैन तीर्थ पृष्ठ 322)(जैन तीर्थ सर्व संग्रह पृ. 344) इसके अतिरिक्त ऐसा भी उल्लेख है कि वि.सं. 1421 से शाह सुजान जी द्वारा यह मंदिर निर्मित हुआ। मुगल आक्रमणों के आधार पर कई मूर्तियां खण्डित हो गई व और अन्य स्थान पर गृह मंदिर रूप में पूंजित होती रही। मूल प्रतिमा चमत्कारी व प्रभाविक होने के कारण पं.पू. पं. श्री पुण्य विमलजी म.सा की निश्रा में पुनः प्रतिष्ठा कराई और पूरे मंदिर में काँच की जड़ाई की हुई है, छतरीनुमा प्रवेश द्वार है। मंदिर को मूल रूप में नूतन बनाया गया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1657 का लेख है। (उल्लेखानुसार) व प्रतिमा पर सं. 1692 का लेख है जैसा कि उपर वर्णन किया है कि जिर्णोद्धार सं. 1887 में सम्पन्न होकर प्रतिष्ठा हुई । उस समय लेख सं. 1692 का उत्कीर्ण हुआ हो।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। (बाएं)

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। (बाएं)

बाहर

(1) श्री गौमुखयक्ष श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2016 का लेख है।

(2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2016 का लेख है।

रंग मण्डप में :

श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2055 माघ शुक्ला 14 का लेख है।

श्री ताम्रयंत्र (श्री यंत्र) 18'' X 14'' का है।

श्री नवलखा पार्श्वनाथ की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2511 का लेख है।

श्री अजितनाथ भगवान की 7''ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1617 का लेख है।

श्री जिनेश्वर भगवान की 4''ऊँची प्रतिमा है।

श्री तांबे का यंत्र 6.5 X 6.5'' का है।

श्री सिद्धचक्र यंत्र 4'' का गोलाकार है।

श्री जिनेश्वर भगवान की 10'' ऊँची चतुर्विशंति प्रतिमा है। इस पर सं. 1509 का लेख है।

श्री अष्टमंगल 6 X 3'' का है। इस पर वीर सं. 2511 का लेख है।

श्री जिनेश्वर भगवान की 9'' ऊँची चतुर्विशंति प्रतिमा है। इस पर सं. 1494 का लेख है।

आलिए में :

श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ की श्याम पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2511 का लेख है।

श्री जिनेश्वर भगवान की 13'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है । इस पर वि.सं. 2511 का लेख है।

श्री माणिभद्रयक्ष की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इसकी प्रतिष्ठा दिनांक 16.1.2014 को श्री कुंदकुंदसूरी की निश्रा में सम्पन्न हुई।

बाहर :

श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 20'' ऊँची प्रतिमा है। इसकी प्रतिष्ठा दिनांक 16.1.14 को सम्पन्न हुई । मंदिर का जीर्णोद्धार वि.सं. 2061 पौष कृष्णा 12 को हुआ ।

मंदिर में श्री सम्मेत शिखर जी, राजगृही, शत्रुंजय, गिरनार तीर्थ के पट्ट बने हुए है।

मंदिर के साथ उपाश्रय है

मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन सुदि 3 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री अरविंद जी पंचोली द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : मो. 09828823232

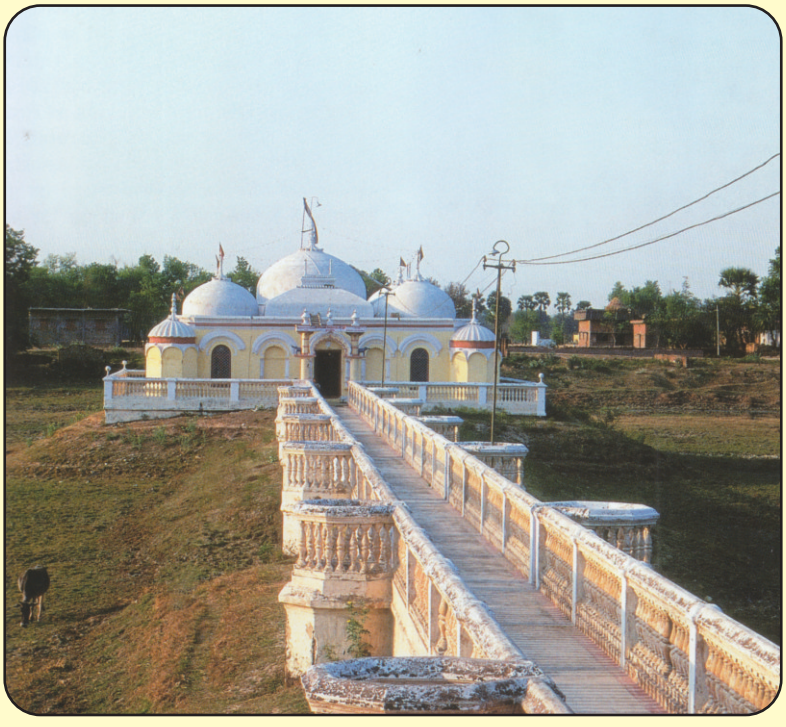

आकर्षक जल मंदिर – गुणाया जी

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर

रत्नगिरी, बनकोड़ा

यह शिखरबंद नूतन मंदिर है। इस नगर का प्राचीन नाम बनकोट भी रहा है।

इस मंदिर को निर्माण करने के लिए प.पू.पं. श्री पुण्य विमल जी म.सा. के जीवन काल में ही यह भूमि (151 एकड़ भूमि) केवल मात्र 151 रुपये जमा करा आवंटन कराई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमा स्थापित है :

(1) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं दिखाई दिया क्योंकि प्रतिमा पर लेप किया गया। यह प्रतिमा गोमती चौराया (राजसमंद) से लाई गई।

श्री सिद्धचक्र यंत्र श्याम पाषाण की 17'' X 17'' की पट्टिका पर है। इस पर सं. 2034 का लेख है। (बाएं)

श्री चरण – पादुका श्वेत पाषाण की पट्टिका 22'' X 22'' पर स्थापित हे। इस पर सं. 2034 का लेख है। (बाएं)

जल मंदिर, पावापुरी सम्मेतशिखर जी तीर्थ के पट्ट पर बने हुए है।

पास में ही श्री शत्रुंजय तीर्थ, अष्टापद व सिद्धचक्र बने हुए है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा माघ वदि 12 को चढ़ाई जाती है ।

सम्पर्क सूत्र : श्री चेतनलाल शाह-098288 95589

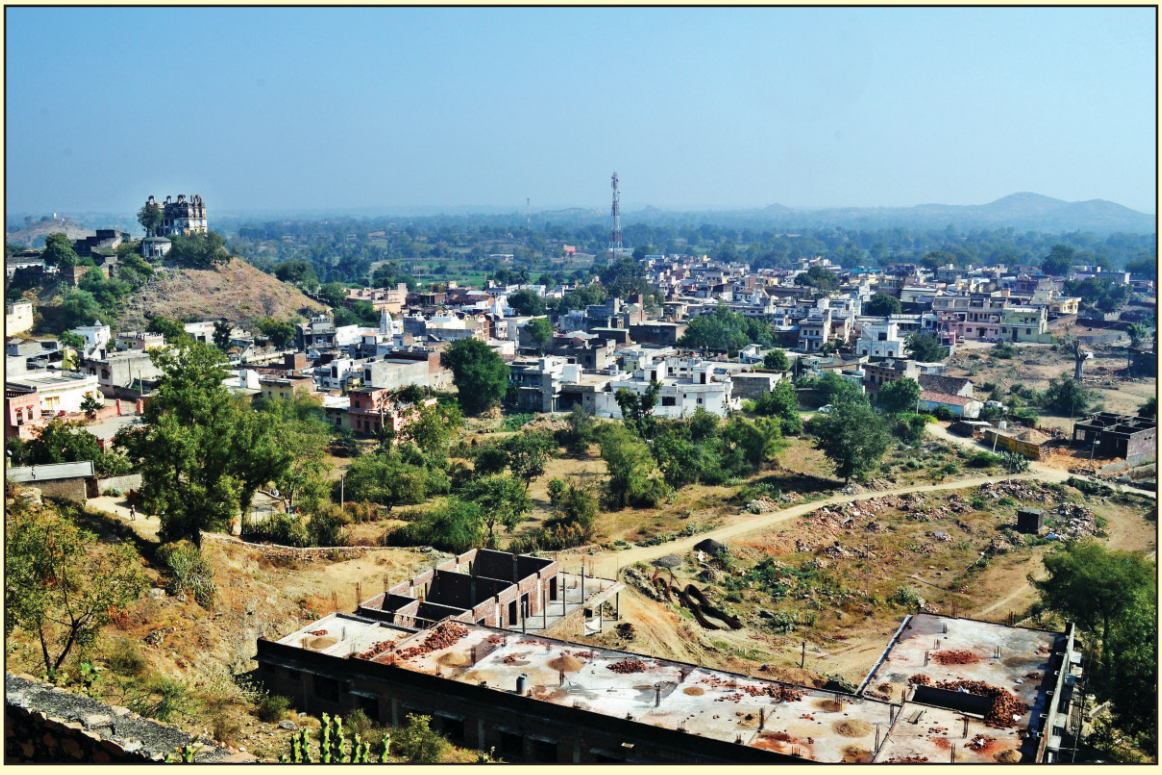

गुरू मंदिर पू. पं. श्री पुण्य विमल जी म.सा.

प.पू. पं. श्री पुण्य विमल जी म. सा. का बचपन का नाम पीताम्बर था, उनका जन्म वि.सं 1948 में हुआ। वे पाटीदार कुल के थे उनकी दीक्षा के साथ श्री पुण्यविमल जी के नाम से जाने गए। इनके पिता का नाम शंकरलाल व माता का नाम गंगाबाई था जो गुजरात के चाणस्मा जिले का एक गांव खेरसम के रहने वाले थे। गुरूदेव अंहिसा सत्य, चोरी न करना आदि बातें उनकी माँ से सुनी। किसी पिड़ित व्यक्ति के दुख को गुरूदेव सहन नहीं कर सकते थे। इन्हीं गुणों के आधार पर व जैन मुनियों की ओर आकर्षित होते रहे और एक दिन ऐसा आया कि (वि.सं. 1972 में) उन्होंने दीक्षा ग्रहण की।

साधु-जीवन पर्यन्त सिद्धान्त का पालन करते हुए, सभी पुण्य कर्म करते हुए वागड़ प्रदेश को अपना कर्म स्थली बताते हुए सुधारात्मक, धार्मिक कार्य करते रहे। उनके जीवन काल में उक्त दर्शाई गई जमीन आवंटित कराई और उसका नाम ''रत्नगिरी'' रखा और उन्होंने इच्छा प्रकट की कि उनका अंतिम कार्य इसी रत्नागिरी पर किया जाए उनका अंतिम चतुर्मास बनकोड़ा में हुआ और चतुर्मास के अंतिम दिन अंतिम विहार कार्तिक पूर्णिमा सं. 2029 को बनकोड़ा ग्राम से रत्नगिरि के लिए प्रस्थान किया। अंतिम विदाई स्थल पर आज उनका समाधि स्थल है जहां पर गुरूदेव की मूर्ति स्थापित है।

गुरू (जिनानंद) के नाम से अंग्रेजी माध्यम की पाठशाला संचालित है, अब पाठशाला का नूतन भवन निर्माणधीन है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा माह वदि 12 को चढ़ाई जाती है। इस मंदिर की देख-रेख समाज कीओर से श्री चेतनलाल जी शाह द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र : श्री सोहनलाल नाथुलाल ट्रस्ट, आसपुर, मो. 09828895589

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर

बनकोड़ा

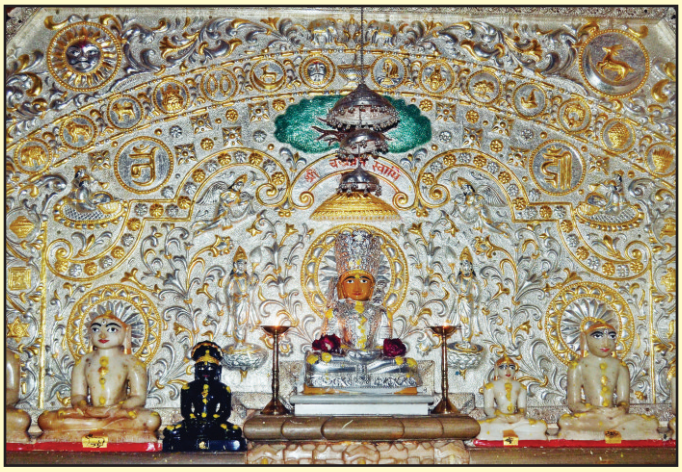

यह शिखरबंद मंदिर करीब 1000 वर्ष प्राचीन है। बनकोडा नगर का प्राचीन नाम बनकोट नगर रहा है। मुस्लिम शासन में इस नगर की संस्कृति को क्षति हुई। उल्लेखानुसार इस नगर में 2 जैन मंदिर स्थापित थे। पड़ोस के ''जूना पादर' में खनन के समय श्री चंद्रप्रभ भगवान की प्रतिमा प्राप्त हुई। मंदिर निर्माण की दृष्टि से कुछ भूमि पहले से थी और कुछ भूमि धूलजी भाई कोठारी नि. बनकोड़ा ने भेंट के स्वरूप समाज को दी। रंगमण्डप बना हुआ है। मंदिर की व्यवस्था एवं व्यय राशि महारावल पूंजा ने दी ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाए स्थापित है :

(1) श्री चंद्रप्रभ भगवान (मूलनायक) की पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है (दाएं)। इस पर अपठनीय लेख है।

(3) श्री पद्मप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। अपठनीय लेख है। (दाएं)

(4) श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अपठनीय लेख है। (बाएं)

(5) श्री नमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1376 का लेख है। लांछन लेख के अनुसार नहीं है। (बाएं)

(6) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(7) श्री विमलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(8) श्री विहरमान पट्ट श्वेत पाषाण का 19''X15'' का है। (बाएं)

(9) अष्टमंगल यंत्र 6''X3'' का है। इस पर सं. 1993 का लेख है ।

बाहर :

(1) श्री विजय यक्ष की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं) इस पर सं. 2041 माह सुदि 8 का लेख है।

(2) श्री ज्वालादेवी यक्षिणी श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं) इस पर सं. 2041 माह सुदि 8 का लेख है।

बाहर :

(1) श्री माणिभद्र यक्ष की देशी पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 9'' नाग तक व 17'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)
इसकी विशेषता : पक्षी के आकार पर बैठी है। अधूरे दस पट्ट बने हुए है।

बाहर – परिक्रमा क्षेत्र में :

(1) प.पू.पं. श्री पुण्य विमलजी म.सा. की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

धातु प्रतिमाएं एवं यंत्र :

(1) श्री मुनिसुव्रत भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1486 का लेख है।

(2) श्री चंद्रप्रभ भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(3) श्री सुमतिनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(4) श्री शांतिनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2002 का लेख है।

(5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है।

(7) श्रैयांसनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(8) श्री महावीर भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(9) श्री शांतिनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।

(10 एवं 11) श्री सिद्धचक्र यंत्र 6'', 6'' गोलाकार है।

(12) श्री जिनेश्वर भगवान की 3.5'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर सं. 1686 का लेख है।

(13) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1585 का लेख है।

(14) श्री जिनेश्वर भगवान की 2'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1746 का लेख है।

श्री जिनेश्वर भगवान की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री सिद्धचक्रयंत्र 4'' का गोलाकार है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3.5'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री जिनेश्वर भगवान की 1.5'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री जिनेश्वर भगवान की 1.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1625 का लेख है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की 1.5'' ऊँची प्रतिमा है।

देव प्रतिमा 1.2'' ऊँची है।

वेदी बनने पर चौमुखा जी है। प्रतिष्ठा होना शेष है।

मंदिर के साथ 10 दुकानें है। साधु–साध्वियों के लिए अलग अलग उपाश्रय है, आयम्बिलशाला व भोजनशाला भी है।

वार्षिक ध्वजा माह सुदि 12 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री चेतनलाल जी शाह करते है।

सम्पर्क सूत्र : 09828895589, छोटालाल भूपतावत - 0992555408

ओसवाल जाति का इतिहास

वीर संवत् 70 में ओसीयां के नागरिकों को मांस, शराब आदि छुड़वाकर आचार्यश्री रत्नप्रभसूरिजी म.सा. ने ओसवाल जैन बनाए थे। उसी वर्ष ओसवालों ने जैन मंदिर का ओसिंया में निर्माण करवाया था। इसलिए सभी ओसवाल मंदिर मार्गी है।

– पार्श्वनाथ परम्परा के इतिहास में से साभार